सत्यमेव जयते

श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल, राजस्थान का उद्बोधन

विश्व ब्राह्मण सम्मेलन

दिनांक 19 जुलाई, 2020 **समय सांयः 06.00 बजे**

स्थान – राजभवन, जयपुर

आज विश्व ब्राह्मण सम्मेलन में देशभर से जुडे हुये समाज बंधुओं का हार्दिक स्वागत करता हूँ। ब्राह्मण समाज भारत के सांस्कृतिक इतिहास और विकास का गवाह रहा है। साथ ही भारत की सनातनी परम्परा को अनदिकाल से तप–त्याग और गहन चिंतन से सम्पूर्ण मानवता का किस प्रकार विकास हो, इस पर कार्य किया है।

ब्राह्मणों का मूल मंत्र रहा है '' सर्वे भवन्तु सुखिनः''। ब्राह्मण की पूजा उसके कर्म त्याग और तपस्या के कारण होती है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि ब्राह्मण क्षेत्रवाद, वर्गवाद, साम्प्रदायवाद, जाति, उपजाति एवं भाषावाद से ऊपर उठकर बात करें। देश को अपनी परम्परा का ज्ञान करायें और राष्ट्र और मानवता की सेवा में आगे आये। सत्य है कि ब्राह्मण जगेगा तो विश्व जगेगा।

मुझे जानकारी दी गई की सर्व ब्राह्मण महासभा पिछले 25 वर्षो से सक्रिय है। महासभा ने पूरे प्रदेश मे भगवान परशुराम जी, जो कि तेज और तप से परिपूर्ण थे, उनके जीवन से मातृ और पितृ भक्ति का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण मिलता है। परशुराम जी के नाम से राजस्थान प्रदेश के 32 जिलों में भगवान परशुराम जी के नाम के चौक बनवाये है। महासभा ने आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के बालक–बालिकाओं के लिये स्कॉलरशिप प्रोग्राम चला रखा है। यह सराहनीय प्रयास है।

सम्मेलन में सामाजिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक क्षेत्रों से जुडे लोगों को एक मंच पर लाकर आज के परिवेश एवं परिस्थिति में ब्राह्मण की भूमिका एवं समाज में उनके योगदान पर चिंतन करना चाहिए। साथ ही इस विश्व ब्राह्मण सम्मेलन के माध्यम से राष्ट्र के नव–निर्माण में सार्थक भूमिका ब्राह्मण कैसे निभायें, इस पर भी चर्चा होनी चाहिए। मुझे पूरा विश्वास है कि यह सम्मेलन राष्ट्र हित में प्रगति के लिये ठोस प्रस्ताव लायेगा।

आमजन को संविधान की जानकारी होना आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता, अखण्डता व सामाजिक समरसता के लिए कर्त्तव्यों का निर्वहन करना होगा।

कोविड–19 के इस संकट के दौर में हम विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता युक्त शिक्षा दिये जाने और उनसे लगातार संवाद किये जाने का प्रयास कर रहे हैं। इस प्रकोप का असर विश्व स्तर पर उच्च शिक्षा एवं शैक्षणिक गतिविधियों पर पड़ा है, इस विषम काल में जबकि सभी उच्च शिक्षण संस्थानों में अनिश्चितता एवं निराशा का दौर व्याप्त है।

मेरी चिन्ता सदैव ही युवा पीढ़ी के साथ जुड़ी रहती है और यह चिन्तन निरन्तर मेरे मन में रहता है कि किस प्रकार हम इस युवा पीढ़ी का मनोबल बनाये रखें, उसे गिरने न दें और उनके मन में निराशा का भाव नहीं आने पाये।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत,

क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया

दुर्ग पथस्तत्कवयो वदन्ति

अर्थात उठो, जागो और जानकार श्रेष्ठ पुरूषों के सानिध्य में ज्ञान प्राप्त करो। विद्वान मनीषियों का कहना है कि जिस प्रकार छुरे के पैने धार पर चलना दुर्गम कार्य होता है, ज्ञान प्राप्ति का मार्ग भी वैसा ही दुर्गम है। कठोपनिषद्, का यह श्लोक आप सभी को समर्पण भाव से अध्ययन करने हेतु समर्पित है।

वर्तमान समाज में महिलाओं के प्रति जो संकीर्ण मानसिकता की भावना है, उसे शिक्षा के द्वारा समाप्त किया जा सकता है। हम सभी को महिला सशक्तिकरण की दिशा में सक्रियता से कदम बढ़ाने की आवश्यकता है।

इससे सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया अपेक्षित दिशा में आगे बढ़ सकती है। हमारा समाज और राष्ट्र सशक्त बनकर सम्पूर्ण मानवता को सच्ची राह दिखा सकता है।

आज का विश्व जिन बड़ी चुनौतियों से जूझ रहा है, उनके निराकरण का मार्ग गांधीजी के विचारों से खुलता है। पर्यावरण असंतुलन, आतंकवाद, चारित्रिक गिरावट और अविवेकपूर्ण तरीके से हो रहा विकास, वे चुनौतियां हैं।

जिनका सामना पूरा संसार कर रहा है। गांधीजी ने 7 पापों का उल्लेख किया – सिद्धान्त विहीन राजनीति, कर्मविहीन धन, आत्मा के बिना सुख, चरित्र के बिना धन, नैतिकता विहीन व्यापार, मानवीयता विहीन विज्ञान और त्याग विहीन पूजा, जिनसे बचना चाहिए ।

गांधीजी के अनुसार नैतिकता, अर्थशास्त्र, राजनीति और धर्म अलग–अलग इकाइयां हैं पर इन सबका उद्देश्य एक ही है और वह है सर्वोदय। राजनीति अगर लक्ष्यहीन और आदर्शों पर टिकी नहीं है तो वह पवित्र नहीं हो सकती।

इसी प्रकार अनुचित साधनों से, बिना परिश्रम कमाया गया धन, एक प्रकार से चुराया हुआ धन है। गांधी जी का आत्मा से अभिप्राय मन की उस आवाज से है, जो गलत और सही का विवेक प्रदान करती है। इसी तरह ऐसा विज्ञान जो मानवता के विपरीत कार्य करे वह वरदान नहीं अभिशाप है।

इस कार्यक्रम में जुडे युवाओं को मैं विशेषरूप से बताना चाहूंगा कि महात्मा गांधी का ग्राम स्वराज्य, स्वदेशी और स्वावलंबन का मार्ग विशेष रूप से अपनाने योग्य है। स्वावलंबन एक ऐसा जीवन दर्शन है जो मनुष्य को दूसरे पर निर्भर होने से रोकता है।

इससे व्यक्ति समाज और अन्ततः राष्ट्र को ऐसे नागरिक मिलते हैं जो चरित्रवान होने के साथ साथ श्रम का महत्व समझने वाले और अनुशासित होते हैं। युवाओं को आज भविष्य की ओर देखते हुए अपने अतीत का स्मरण भी करना चाहिये।

भारत हमेशा से ऐसा देश था, जो अभावों के बावजूद संतुष्टि महसूस करता था। यहां के गांव पूरी तरह आत्मनिर्भर थे ।

गांधी जी ने एक ताबीज दिया था जिसका उल्लेख मैं आज विशेष रूप से करना चाहूंगा। गांधीजी ने कहा था मैं तुम्हें एक तिलिस्म देता हूँ जब भी दुविधा में हो या जब अपना स्वार्थ तुम पर हावी जो जाए तो इसका प्रयोग करो।

सबसे गरीब और दुर्बल व्यक्ति का चेहरा याद करो जिसे तुमने कभी देखा हो, और अपने आप से पूछो–जो कदम मैं उठाने जा रहा हूँ वह क्या उस गरीब के कोई काम आएगा ? क्या उसे इस कदम से कोई लाभ होगा ?

दूसरे शब्दों में क्या यह कदम लाखों भूखों और आध्यात्मिक दरिद्रों को स्वराज देगा ? तब तुम पाओगे कि तुम्हारी सारी शंकाएं और स्वार्थ पिघल कर खत्म हो गये हैं। यह तिलिस्म आज भी उतना ही कारगर है।

हमारा देश विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं और संस्कृतियों का संगम है। यह विविधता भरी संस्कृति भारत को पूरी दुनिया में विशिष्ट बनाती हैं। आज का समय इस संस्कृति को बनाये और बचाये रखने का है। देश के सामने जो चुनौतियां हैं, उनमें गरीबी, अशिक्षा और सामाजिक पिछड़ापन प्रमुख है। देश के नागरिकों का समग्र विकास हो इसके लिए सरकार निरंतर कार्य कर रही है। इन कार्यों की गति बनी रहे, इसके लिए सभी लोगों का सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। सहयोग और शांतिपूर्ण अस्तित्व हमारी संस्कृति का भी अभिन्न हिस्सा है। इस समय हम सबका दायित्व है कि देश को एक ऐसे मार्ग पर ले जाएं जहां सभी लोग अपने–अपने विश्वासों पर आस्था रखते हुए स्वतंत्रता का अनुभव कर सकें।

प्रारंभिक कक्षाओं से ही विद्यार्थियों को हमारे राष्ट्रनायकों के जीवन और उनके कार्यो की जानकारी दी जाती है। इसके साथ ही विद्यार्थियों को यह शिक्षा भी मिलनी चाहिए कि वे व्यावहारिक रूप में इन सिद्धान्तों को किस प्रकार जीवन में आत्मसात कर सकें।

पर्यावरण को हो रहे नुकसान से आज पूरा विश्व चिंतित हैं। इस दिशा में महात्मा गांधी का बताया रास्ता कि वस्तुओं का उत्पादन गांवों में ही हो और ऐसी सामग्री से हो जो वहीं मिलती हो तो प्रदूषण और पर्यावरण असंतुलन जैसी समस्या से बचा जा सकता है।

सरकार ने इस दिशा में एकल उपयोग प्लास्टिक मुक्त भारत बनाने का महत्वपूर्ण कार्य आरंभ किया है। आप सबसे इस अनुष्ठान में सम्मिलित होने का मैं आग्रह करता हूँ। यह भविष्य में होने वाली बहुत सारी समस्याओं को दूर करेगा।

सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान के माध्यम से भी एक संदेश दिया है, जिसके सार्थक परिणाम मिले हैं। इस कार्य में समाज के सभी वर्गों की जो भागीदारी रही है वह उत्साहवर्द्धक है। जल संरक्षण हमारी आज की प्राथमिकता है। जल संकट से जूझने और अपनी पीढ़ियों के लिए पानी की विरासत बची रहे इस उद्देश्य से जलयोद्धा अभियान आरंभ किया गया है।

वैदिक काल में वेदों के आधार पर सभी कार्य किये जाते थे। जन्म से लेकर मृत्यु तक के सभी संस्कार वेदों द्वारा निर्धारित होते थे, जो आगे चलकर वैदिक परंपरा के रूप में विद्धमान हुए। सनातन धर्म एक जीवन यापन पद्धति है। जिसके अनुयायी ज्यादातर भारत, नेपाल और मॉरिशस में हैं। इसे विश्व का सबसे प्राचीन धर्म कहा जाता है। इसे ''वैदिक सनातन वर्णाश्रम धर्म'' भी कहते हैं। अर्थात इसकी उत्पत्ति मानव की उत्पत्ति से भी पहले हुई है। धार्मिक विद्वानों का मानना है कि हिन्दू धर्म भारत वर्ष की विभिन्न संस्कृतियों एवं परंपराओं का सम्मिश्रण है।

जिसका कोई संस्थापक नहीं है। यह धर्म आपने आप में कई उपासना पद्धतियाँ, मत, सम्प्रदाय और दर्शन समेटे हुए है। सनातन धर्म अनुयायियों की संख्या के आधार पर विश्व का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है। संख्या के आधार पर इसके अधिकतर उपासक भारत में और प्रतिशत के आधार पर नेपाल में हैं। हालाँकि इसमें कई देवी–देवताओं की उपासना की जाती है। इसे सनातन धर्म अथवा वैदिक धर्म भी कहते हैं। इण्डोनेशिया में इसका औपचारिक नाम ''हिन्दु आगम'' है। हिन्दू केवल एक धर्म या सम्प्रदाय ही नहीं है अपितु जीवन जीने की एक पद्धति है।

कोरोना महामारी में भारतीय संस्कारों का विश्व में प्रचार–प्रसार और विश्वभर में वेदिक कल्चर को बढावा देने के लिए आयोजित यह गोष्ठी आप सबके लिए भारतीय संस्कृति को समझने का एक और अवसर प्रदान करेगी। यह मेरी आशा और शुभकामना है।

धन्यवाद। जय हिन्द।